जल एंव उसका उपयोग

भारत एक ऐसा देश है जहाँ पर जल का बाहुल्य भी है तो उसका आभाव भी है । ज्यादा हिस्सा ऐसा है जहाँ आभाव है । जैसा कि हर क्षेत्र मे भारत की बितरण प्रणाली दोष पूर्ण है ।पानी के मामले मे यह तथ्य प्रत्यक्ष देखा जाता है । एक स्थान ऐसा है जहाँ संसार की सबसे ज्यादा वर्षा होती है 12,500 ml सालभर होती रहती है तो कुछ जगह एसी है जहाँ कई सालो मे कभी कभी होती है फिर भी दोनो जगहो पर आबादी है और अपना अपना काम चला रही है । हर शहर जहाँ पाईपो से पानी घरो मे पहुंचता है इतनी पानी की कमी है कि पुरे दिन मे दो या चार घन्टो की अपूर्ति होती है । कुछ शहरो मे पानी के नल तो है पर पानी टैकंरो से ही आता है या खरीदना पडता है पानी का व्यपार देखना है तो गुजरात व तामिल नाडू मे देखें जितना चाहे पानी खरीदे और खर्च करे । पानी सरकारी महकमो को नही मिलता पर इन बेचने वालो को कहाँ से मिलता है उपर बाला ही जाने पर हमे मंत्त मालूम है सरकार देगी तो चोरी भी करेगे या मुफ्त लेगें बरना धन्धे वाले को धन्धा क्यो न दें।

हम सब लोग मिलकर टकराव कर सकते है सरकार के साथ कि पानी का राष्टीयकरण न किया जाय परन्तु क्या हम बडे शहरो को या बडी कम्पनियो को पानी की चोरी से रोक सकते है क्या? जो पैसे की ताकत से पानी को खरीद या बेच रहे है । क्योकि प्रान्तो की व शहरो की सरकारे इसमे भागीदार हे अनयथा इन प्रान्तो की राजधानी मे रहने वाले नेताओ की पानी की बहुत ज्यादा जरुरते है कैसे पूरी होगी ? आज भी हम मल्टी नेशनलस को अपने पानी के अथह व्यय से नही रोक पा रहे है जो कोका कोला पैप्सी कोला और प्रसाधन संस्थानो म बोतलो को साफ करने मे ही खर्च हो रहा है । बोतलो मे भर कर मे ही बेचा जा रहा है हमारी बिल्ली हमे ही म्यायूं बली कहावत चरितार्थ हो रही है । पर क्योकि इसम कितने ही लोगो की जीविका चल रही है हम चाहकर भी इसे रोक नही सकते है न मेरा ध्येय इस सबको रोकना है । पर मै एक बात जरुर कहना चाहूँगा कि यदि हम इन बडी बडी कम्पनियो से उनके जल व्यापर के फल स्वरुप उजडे हुये गाँवो, खेतो की कहानी, और अनयाय पूर्ण प्रणाली की चर्चा मैत्री पूर्ण ढग से करे तो उनसे जल्दी उत्तर की तथा उस क्षेत्र के लाभ की अधिक सम्भाबनाये बढ काती है । सरकार की अनयाय पूर्ण नितियो से लडने मे कुछ हासिल नही होने का लाभ हमें और सरकार से लडने बहुत अधिक समय लग जायेगा वह अलग ।नियम बन भी गये तो लागू कौन करेगा । एक बिचार हमारे मन मे आया है क्यो न हम इन मल्टीनेशनलस को यह अनुमति दे दे कि उन्हे सिर्फ समुद्र के पानी को ही साफ करके बोतल मे बेचने की इजाजत होगी । यह तकनीक हमारे देश मे आयेगी जो उन कम्पनियो के पास है तथा साधन भी और हमारा पानी भी चोरी नही होगा हो हमारे पास कमी मे है , इस दिशा मे बहुत अनुसंधान की अवश्यकता है और पंयास किया जाय कि सौर ऊर्जा यह काम हौ ताकि हमारे और प्रकृतिक साधनो का अप्व्यय न हो ।

इस समस्या को सुलझाने के लिये पानी के संकलन, संचालन और व्यय सम्बन्धी जिस दूरद्रर्शिता व पूंजीपतियो का सहयोग, वैज्ञानिको के परामर्श की आवश्यकता है, ऐसी सम्यक योजना की आशा बर्तमान भारत सरकार से हम कर सकते है क्या? पर चाह करनी पडेगी। अमरीका मे जहाँ हम रहते हे मिचिगन मे ही पूरी दुनिया के मीठे पानी का 20% चार बडी वडी झीलो मे है ।पर यहाँ के लोग साल मे करीब सौ करोड का बोतल पानी खरीदते है क्योकि उनकी जानकारी मे नल का पानी गन्दा है । लेकिन सरकार और जनता ने यहाँ पर सोचना शुरु कर दिया है कि पानी के वे रोक टोक तरीको को रोका जाय परमिट दिये जाय जितना पानी कोई कम्पनी के रुप मर, किसानो की खेती मे काम के लिये निकाला जाय, इसका समाज की समपदा मान कर उससे पैदा हुये मुआवजे को उसी अनुपात मे समाज को समाज की सम्पत्ती मान के उसे बापिस दिया जाय ।

क्या हमारे देश मे यह नही हो सकता है कि किसान जो एक पम्प खरीद सकता है और उसे चलाने के लिये डजिल या बिजली खरीद के उसे दिन रात चलाकर जितना पानी जमीन से निकाल सकता है ।यह पानी बह सिर्फ अपने लिय ही नही निकालता बरन बेचता भी है । उसे किसने दिय यह हक? उसके इस कर्म का आस पास कै गरीब किसानो की जमीनो पर भी पडता है । उनको अपनी जमीन पर अपनी फसल के लिये और अधिक पानी की जरुरत पडती है । क्या यह पम्प बाला अमीर ज्यादा लगान देता है या अपनी आनदनी को अपने पडौसी के साथ वाटतां है । नही तो क्यो नही क्या यह अन्याय नही है? हमने अपनी यात्रा के दौरान कई ऐसे हरे भरे खेत देखे है जो 20 25 सूखे खेताो से घिर अपनी कहानी रो रहे थे । क्या पंचायते इसे रोक सकती है ?

एक और स्वतंत्र विचार मुझे अहमदाबाद मे देखने के बाद आया । हर बडे शहर के बीच मे चाहे यह गुजरात हो या राजस्थान एक बडा नाला शहर के बीचो बीच दुर्गन्ध उडाता हुआ एक अजगर की तरह पसरा हूआ है क्यो न इस पानी को हम पाईपो के जरिये शहे से दूर जहाँ आवादी न हो और कृषी की सम्भावना हो ले जाया जाए । इस गन्दे पानी का दो तरह से निदान हो सकता है या तो सब्जी के बागो मे या फिल्टर करके जमीन मे रिचार्ज कर दिया जाय ाैर एरिएशन के बाद इसको स्थानिय नदियो मे डाल दिया जाए । पर ईस बिश्य मे बहुत अनूसंधान की आवश्यकता है । पहले तो इन नालो को बन्द करके पाईप डालने होगे । फिर जैसे साफ पानी को गाँव से शहर लाया जाता उसी तरह गन्दे पानी को शहर से गाँवो कि तरफ ले जाया जाए । पर इस गन्दे पानी को ऐसी जगह ले जाया जाए जहाँकृषी के लिये अनय साधन न हो । इस पूरी स्कीम मे जो जैसा पानी लेगा उसका वैसा ही मूल्य देना होगा, साफ तो जयादा मूल्य देना होगा । इस काम को करने के लिये स्वायत बोर्ड हो न कि सरकार करे हर काम को अपने उपर ओड ले, सरकार का काम जन हित मे नियम बनाना व उनको लागू करना होता है । हम लोग क्या इतनी कम अकल के है कि बिना सरकारी हस्ताक्षेप के कोई काम नही कर सकते है ?

पानी बचाने के बहुत से उपायो मे एक है नहाने के पानी मे कमी करना, पानी से शरीर की सफाई की जाय उसको व्यर्थ न बहाया जाए । साबुन का इस्तेमाल तलाब पर नही किया जाना चाहिये न नहाने मे ही क्योकि इस तरह ईस्तेमाल किया हुआ पानी कृषी के लायक नही रहता है और मछलियो के लिये भी अच्छा नही होता है । अगर आप बदन को साफकरना चाते है तो गर्म पानी को बाल्ती मे लो फिर उसमे एक छोटा तौलिया डुबोकर शरीर को मले तो बदन ज्यादा साफ होगा बजाय साबुन के इस्तेमाल से ।शरीर रगड्कर नहाने से मर्रा हुई सूखी त्वचा हट जाती है और हमारे रन्ध खुल जाते है । रगडने से सफाई भी होगी और मालिश भी, बाद मे यह पानी पेड़ो को सींचने मे भी काम मे लिया जा सकता है । हम गत कई सालो से साबुन का ईस्तेमाल नहाने के लिये नही करते है । जितने अधिक मकान शहरो यो गाँवो मे बन रहे है उससे वर्षा का पानी जमीन मे न जाकर नालियो मे बह जाता है और नालियां नालो मे बदल जाती है । नियम होना चाहिये की हर नये मकान मे राजस्थान के तरह वर्षा के पानी को जमा करने का टैंक हो । ताकि इस पानी को गैर खाने की हर जगह जैसे बगीचो मे, ईस्तेमाल कर सकते है । अच्छे पानी को शहर मे लान वगैरहा मे इस्तेमाल करना पानी का अपव्यय है ।इसको रोकना चाहिये । यदि बर्षा का पानीठीक से जमा के लिया जाय तो पखाने मे फ्लस के लिये प्रयोग मे करा जा सकता है । इसी तरह नहाने के बाद बाल पानी भी फ्लस के काम मे लिया जा सकता है ।

आवश्यकता है ऐसे छोटे प्लान्टस की जो पखाने को खाद मे बदल सके ।इसके लिये तकनीक है या स्थानिय बनाई भी जा सकती है । हमारे देश मे जेवल वर्षा का आधा ही पानी जमीनमे जाता है वाकी नलियो मे या सड्क के किनारे गड्डो मे कीचड् की तरह सड्ता रहता है, या बाढ़ो के पानी के रुप मर समुद्र से जल्दी ही जा मिलता है । साईस की मदद से हम इस आधे पानी को सीधे समुंद्र मे जाने से रोक सकते है । जमीन के अनदर बड़े टैंक बनाकर । पर यह काम सहयोगिक क्षेत्र मे हो सरकार न करे । क्योकि व्यपारी बगै अपने उत्थान के लिये अधिक प्रयत्यनशील व सजग होता है ।हमने बहूत से नये नये अच्छे काम गाँवो मे होते हे देखे है पर एक जगह जो काम ो रहा दूसरे प्रान्त मे उसका लोगो को पता भी नही है । अच्छी विकास की खबरे कछुये की गति से चलती है पर बुरी प्रकाश की गति से चलती है । जरुरत है अच्छे कामो की खबर फैलाने की न कि हर बात मे सरकारसे उलझने की । डाक्टर सुन्दरेसन एक गाँव को बदल डाला या नानाजी देशमुख ने चित्रकूट के आस पास करीब पाचं सौ मध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश के गाँवो को बदल दिया पर हम इस विकास को हर भारत के गावँ मे क्यो नही ले जा सकते है ?
स्मय की माँग को देखते हुये पानी की बचत के लिये उपयोगी तरीके ईजाद करने के लिय जन आवाहन करना चाहिये वरना मुदडो को लेकर सरकार के साथ तकरार मे समय, धन, व शक्ति तीनो ही की हानि होगी कैसे करेगे कुछ सुझाव है जो नीचे लिखे है ।

- अगर हम भारत मे सुधार चाहते है तो पानी की बचत सम्बन्धित समाचारो को, समाचार पत्रो मे मुख्य स्थान देना होगा करत करत अभ्यास से जड्मति होत सुजान, यह विचार भारत के राष्ट्रपति श्री अबदुल कलाम जी का है
- मार धाड् की खबरे जो आंतक ही फैलाती हे उन्हे पांशवे या छटे पृष्ट पर ही ईथान मिलना चाहिये जैसा ईजराइल मे होता है
- स्फाई मे पानी का कम से कम ईस्तेमाल होना चाहिये जैसे वैक्यूम के सहारे से सफाई की जाय यहाँ तक इसके सहारे से फ्लश भी साफ किये जाने लगे है इन उपकरणो को सूर्य ऊर्जा या डजिल, हवाई मिलो के जरिये से चलाया जा सकता है नई नई सम्भावनाये पैदा होगी
- ह्मे अपने दृष्टिकोण आशाजनक रखने चाहिये निराशा से तो अच्छा है तो हमे अवश्य ही सफलता हाथ लगेगी और हमारा उत्साह ही बढेगा
- शहरो मे गांवो मे सार्वजनिक नलो पर होने वाली बरबादी को रोकने के लिये समूहिक प्रार्पटी की देखभाल करना हम सभी का काम है और इसके लिये समूहिक जागरुकता लानी होगी । पर उनके आस पास जो कीचड् के लिये सोकिंग पिट का निर्माण किया जाय फिर उसे रेत ब कंकडो से भर दिया जाय ताकि कीचड् न हो । जब हाथ पम्प के लिये खोदा जाय उसी समय इसका भी प्रोविजन रक्खा जाय
- पानी राष्ट्र की सम्पति है और इसकी मात्रा सीमित है और उसकी बरबादी को रोकना हम सबकी सामूहिक व एकाकी जिम्मेदारी होनी चाहिये
- कोई चीज मुफ्त नही होती पर यदि आप सरकार से कराना चहते है तो अवश्य ही इसका तीन गुना मूल्य देना होगा जनमानस को अप्रयत्क्ष रुप मे
- आकड्रो से जनता को अबगत काराया जाय कि किन किन तरीको से कितने पानी की बचत हो चकी है अब तक । समय समय पर इन खबरो से लोग उत्साहित कोकर नियमो का पालन अधिक करेगे पानी को बचाने के लिये
- गरीबो को गरीबी से उपर उठाना है तो उनमे आत्म सम्मान जगाना होगा, उन नियमे को हटाना होगा जो उन्हे गरीबी से उपर उटने मे बाधा डालते है क्योकि यदि मुझे कुछ बताओ शायदमुझे याद रहे पर यदि मुझे अपने साथ लेकर चलो या काम मे लगाओ तो मे शायद ही भूलू

सरकारी कर्मचारियो को समाज के जन मानस की सेवा की ट्रेनिंग दी जाय कि उनकी सेवाये जनता के लिये है न की जनता पर राज करने के लिये । सरकारी अनुदानो को ऋण के रुप मे दिया जाय जिससे लोगो मे आत्म सम्मान व विश्वास पैदा हो कि हम अपनी जिन्दगी स्वयं चलाने योग्य है ।

रश्मि उमेश रोहतगी 14 **अप्रैल** 2002

Umesh Rashmi Rohatgi 24161 Nilan Drive Novi MI 48375 Ph: (248) 471-5786
Web page : www.rurohatgi.com Email: rurohatgi@yahoo.com